(iii) मकालू (8481) (iv) धौलागिरि (8172) (v) अन्नपूर्णा (8071) (vi) नंगा पर्वत (87817) (vii) कामेट (7756)
(viii) नामचा बरवा (7756) (ix) बद्रीनाथ (7138) (x) त्रिशूल (7120)

⇒ महान हिमालय के आर-पार की जाने की मुख्य दर्रे हैं

राज्य		दर्रे
(1) J & K	—	जोजिला, बुर्जिला
(2) हिमाचल प्रदेश	—	बारालाचाला, शिपकीला

⇒ दलाई लामा + 17वाँ करमापा - शिपकीला दर्रे द्वारा भारत आया

(3) उत्तरांचल	—	थांगला, माना, लिपुलेख, नीति
(4) सिक्किम	—	नाथुला, जेलेप्ला
(5)		

Trade Route :-

शिपकी + गारटोक (तिब्बत)

(A) शिपकीला दर्रे - हिन्दुस्तान + तिब्बत HR इसी से होकर गुजरता है यह हिमाचल प्रदेश में शिमला को तिब्बत के 'गारटोक' से मिलाता है।

(B) जेलेप्ला - यह पश्चिम बंगाल के 'कालिम्पोंग' को तिब्बत के 'ल्हासा' से मिलाता है। कालिम्पोंग + ल्हासा

(B) मध्य हिमालय

इसे भी कहा जाता है - हिमाचल श्रेणी / लघु हिमालय / मध्य हिमालय
हिमाचल श्रेणी महान हिमालय के समानान्तर है।
- चौड़ाई - 60 से 80 km, ऊँचाई - 3500-4500 m
- इसकी चोटियाँ बर्फ से ढकी रहती हैं।

⇒ मध्य हिमालय की श्रेणियों में पीरपंजाल श्रेणी, धौलाधार श्रेणी, नागटिब्बा श्रेणी, महाभारत श्रेणी / लेख

※ पीरपंजाल श्रेणी :-> यह कश्मीर में अवस्थित है
↳ यह मध्य हिमालय की सबसे लम्बी और महत्वपूर्ण श्रेणी है
⇒ इसका विस्तार - झेलम से व्यास तक (300-400 km)
⇒ पीरपंजाल श्रेणी - जास्कर श्रेणी से अलग होता है ⟶ 'कश्मीर की घाटी' द्वारा
↳ महान हिमालय और मध्य हिमालय के मध्य अवस्थित

* पीरपंजाल श्रेणी के प्रमुख दर्रे :-

(A) पीरपंजाल दर्रा - 3480 मी०
(B) बेदिल दर्रा - 4270 मी० सबसे ऊँचा दर्रा
(C) बनिहाल दर्रा - 2832 मी०

} प्रमुख हिमालय के दर्रे।

Note :- जम्मू श्रीनगर मार्ग इसी बनिहाल दर्रे से गुजरता है।

* पीरपंजाल श्रेणी से निकलने वाली नदियाँ → किशन गंगा, झेलम, चिनाब etc.

धौलाधर श्रेणी (पीरपंजाल श्रेणी) - रावी नदी के दक्षिण पूर्व की ओर आगे बढ़ती है यही कहलाती है धौलाधर श्रेणी।

* धौलाधर श्रेणी में ही हिल स्टेशन - डलहौजी, धर्मशाला, शिमला

Note :- कश्मीर की घाटी - यह पीरपंजाल और जास्कर श्रेणी के बीच है।

=> 135 k.m लम्बी और 40 k.m चौड़ी इस घाटी का क्षे० 4921 वर्ग k.m है।

* (कश्मीर घाटी) प्लीस्टोसीन काल में यहाँ विशाल हिमानी झील थी जो अब पीरपंजाल और जास्कर के अवसाद से भरी। निर्माण हुआ यही कश्मीर घाटी कहलाया।

* कश्मीर के झील का मैदान, भारत का सबसे ऊँचा मैदान है। इसकी औसत ऊँचाई 1585 m.

• कश्मीर को कहा जाता है - भारत का स्वर्ग, दुनिया का स्वर्ग

• कश्मीर में मीठे जल की दो झीलें वुलर, डल

* डल झील - इसी के किनारे श्रीनगर बसा है

* वुलर झील - यही भारत में मीठे जल की सबसे बड़ी झील।

• वुलर झील के किनारे ही शालीमार और निशात बाग है

शालीमार - जहाँगीर
निशात - शाहजहाँ।

~~Note :-> "निलका झील" भारत में खारे जल की सबसे बड़ी झील, भारत की दूसरी सबसे बड़ी झील भी यही है।~~

मसूरी श्रेणी :=> यह उत्तराखण्ड में है मसूरी से लैंसडाउन तक 120 km लम्बी श्रेणी है।
इसी पर प्रसिद्ध हिल स्टेशन- मसूरी, नैनीताल, रानी खेत ~~(काठगोदाम)~~ चकराता,

महाभारत श्रेणी :-> यह मसूरी श्रेणी का ही पूर्वी विस्तार है यह दक्षिणी नेपाल में अवस्थित है।
- इसकी सबसे ऊँची चोटी- महाभारत चोटी (3000 मी०)
- महाभारत श्रेणी के उत्तरी भाग में काठमांडू घाटी है।

काठमाण्डू घाटी नेपाल का हिल स्टेशन यह कहलाता है- नेपाल का स्वर्ग

Imp.

=> मध्य हिमालय के उत्तरी भाग में कोणधारी वन पाये जाते हैं।
=> इसकी ढाल पर छोटे-2 घास के मैदान होते हैं इन्हे कहा जाता है, कश्मीर में - मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग) ✓✓
=> उत्तराखण्ड में इसी घास के मैदान को - 'बुग्याल' 'पयार' ✓

(C) शिवालिक श्रेणी / वाह्य हिमालय / उप हिमालय

=> हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी है। इसकी अवस्थिति है लघु हिमालय और उत्तरी मैदान के बीच।
=> शिवालिक श्रेणी को ही कहा जाता है - बाह्य हिमालय/उपहिमालय
=> लम्बाई- पश्चिम में- पोतवार बेसिन से पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी तक 2400 K.m है।
=> पश्चिम बंगाल में बहने वाली नदी 'रायडक' के द्वारा अपरदन के कारण शिवालिक श्रेणी अदृश्य है।
=> सर्वाधिक चौड़ाई - H.P - 50 K.m
न्यूनतम चौड़ाई - Ar.P - 15 K.m
=> शिवालिक श्रेणी की औसत ऊँचाई लगभग 1000 मी० है।
=> ~~शिवालिक श्रेणी में खनिज तेल और प्राकृतिक गैस के भंडार मिलते हैं।~~

⇒ शिवालिक श्रेणी का निर्माण इनरी हिमालय की नदियों द्वारा लाये गये मलबे, बालू व बजरी व कंकड़-पत्थरों से हुआ है।

⇒ अतः तीनों हिमालय में सबसे बाद में इसी का निर्माण हुआ।

⇒ शिवालिक श्रेणी का स्थानीय नाम —
जम्मू में — जम्मू की पहाड़ी (लैण्डस्लाइड ज़ोन)
अरुणाचल प्रदेश — डफला, अबोर, मिरि, मिश्मी पहाड़ी (मिजू)
नेपाल में — चूरिया श्रेणी, डुंडवा (दरवाजा), चुरिया/मुरिया

⇒ शिवालिक श्रेणी की भौगोलिक रचना है →

(a) ताल: मध्य हिमालय श्रेणी और शिवालिक श्रेणी के बीच भूगर्भकाल की हिमानी झील है जो अब भर गयी है और इसके किनारे नगर बसा गये हैं — नैनीताल, भीमताल, सातताल, राजमहल (मध्य) → उत्तराखण्ड

(b) दून / द्वार: शिवालिक क्षेत्र में उत्थान के कारण इससे हिमालय की नदियों का जल-प्रवाह रुका, झील बनी, इसमें मलबे का निक्षेपण हुआ फलतः झील क्षेत्र में चौड़े मैदान बने। यहाँ ऊँचे मैदान

पश्चिम में → दून → जैसे → देहरादून (उत्तराखण्ड)
कोठादून, पाटलीदून, चौखम्बा दून
जम्मू → ऊधमपुर दून, कोटलीदून आदि

पूर्व में → द्वार — हरिद्वार

पूर्वांचल श्रेणी (हिमालय की पूर्वी पहाड़ी)

हिमालय 'दिहांग गार्ज' को पार करने के बाद दक्षिण की ओर मुड़ता है और कई पहाड़ियों का एक समूह बनाता है जिन्हें सम्मिलित रूप से कहलाते हैं — पूर्वांचल श्रेणी / पूर्वी पहाड़ियाँ